



## प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य: राष्ट्रीय आन्दोलन का दस्तावेज़

डॉ. निजाम उद्दीन खान

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गांधी फ़ैज़-ए-आम कॉलेज, शाहजहांपुर

डॉ. दरखशां बी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गांधी फ़ैज़-ए-आम कॉलेज, शाहजहांपुर

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.23771504>

प्रेमचंद युग राजनीतिक संघर्ष का युग था। दूसरे शब्दों में प्रेमचंद युग राष्ट्रीय आन्दोलन का युग कहा जा सकता है। एक ओर ब्रिटिश सरकार की कूटनीतिक चालें थीं तो दूसरी ओर गाँधीवादी सत्याग्रह और समाजवादी आन्दोलन जोर पकड़ चुका था। तदयुगीन समाज में दो प्रकार की मानसिकताएं कार्य कर रही थीं। एक ओर कुछ लोगों द्वारा अंग्रेजों का समर्थन किया जा रहा था दूसरी ओर उनकी नीतियों से आन्दोलन की अग्नि प्रज्ज्वलित हो रही थी। 'कांग्रेस का इतिहास' नामक पुस्तक में श्री राजेन्द्र मोहन लिखते हैं- "कांग्रेस का नरम दल, जिसकी पकड़ में कांग्रेस की सम्पूर्ण व्यवस्था थी इस समय यह मान कर चल रहा था कि परमात्मा की अनुकम्पा ही है, भारत को ब्रिटिश सरकार की छत्रछाया मिल सकेगी। वास्तव में अंग्रेजों का अन्दर से हृदय अत्यंत कोमल और दयालु है। उनके इस देश से चल जाने से इस देश का सर्वनाश हो जाएगा।"<sup>1</sup>

प्रेमचंद राष्ट्रीय आन्दोलन के निर्भीक व अविचल योद्धा थे। विदेशी सत्ता के साम्राज्यवादी चक्र में दबा-पिसा भारत उनकी रचनाओं में बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रतिबिम्बित हुआ है। प्रेमचंद भारतीय राजनीति के एक स्तंभ हैं। प्रेमचंद युग की प्रमुख समस्या स्वाधीनता की प्राप्ति थी। देश में स्वाधीनता के विचारों का प्रचार उन्होंने साहित्य के माध्यम से उतने ही जोरों से किया जितना कि सक्रिय राजनीति में सत्य व अहिंसा के द्वारा गाँधी जी ने। पराधीनता की शृंखलाएँ तोड़ने के लिए भारतीयों में नवीन चेतना, साहस और शक्ति का संचार प्रेमचंद ने साहित्य के द्वारा किया। बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे एक पत्र में 1930 ई. में वह स्वयं कहते हैं - "मेरी आकांक्षाएं कुछ नहीं हैं। इस समय तो सबसे बड़ी आकांक्षा यही है कि हम स्वराज्य संग्राम में विजयी हों। धन या यश की लालसा मुझे नहीं रही खाने भर को मिल जाता है, मोटर और बंगले की मुझे हवस नहीं, हाँ यह ज़रूर चाहता हूँ कि दो चार ऊँची कोटि की पुस्तकें लिखूँ, पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य-विजय ही है।"<sup>2</sup> प्रेमचंद के लगभग समस्त उपन्यास राष्ट्रीय आन्दोलन का कहीं न कहीं किसी रूप में चित्रण

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

करते हैं उनके उपन्यास साहित्य में भारत के स्वाधीनता-आन्दोलन की गहराई और प्रसार के दर्शन होते हैं। इसी संदर्भ में श्री. शिवनारायण श्रीवास्तव का यह वचन अत्यंत समीचीन है - "प्रेमचंद के उपन्यास राष्ट्रीय जागृति के इतिहास हैं; कालांतर में यदि इस समय का इतिहास लुप्त हो जाए और इनकी रचनाओं को बचाया जा सके तो इन्हीं के आधार पर विचारशील देश की सामाजिक एवं राष्ट्रीय जागृति का व्यापक आभास प्राप्त किया जा सकता है।"<sup>3</sup>

'सेवासदन' प्रेमचंद का ऐसा एक उपन्यास है जिसमें वेश्यावृत्ति की समस्या को उठाया गया है। प्रेमचंद इसके लिए उत्तरदायी सामाजिक, आर्थिक सूत्रों की खोज करते हैं। दहेज प्रथा, अनमेल विवाह ही वेश्यावृत्ति की ओर नहीं ले जाते हैं, बल्कि उपयुक्त शिक्षा का अभाव और प्रतिकूल परिवेश भी इसके लिए उत्तरदायी है। मध्यवर्ग की झूठी मर्यादाएं भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं इस मर्यादा को प्रेमचंद निरंतर तोड़ते रहे हैं। 'सेवासदन' केवल एक सामाजिक उपन्यास नहीं है, बल्कि यह उस दौर के राष्ट्रीय नवजागरण और बदलते राजनैतिक परिदृश्य का एक जीवंत दस्तावेज भी है। सदन जब संगीत पाठशाला में आता है "वह उठाना ही चाहता था इतने में गायनाचार्य ने सितार पर यह गाना शुरू किया-

"दयामयि भारत को अपनाओ।

तव वियोग से व्याकुल है मा, सत्वर धैर्य धराओ।

प्रिय लालन कहकर पुचकारो, हँसकर गले लगाओ ॥

दयामयि भारत को अपनाओ।

सोये आर्य जाति के गौरव, जननि ! फेर जगाओ।

दुलड़ा पराधीनता रूपी बेड़ी काट बहाओ ॥

दयामयि भारत को अपनाओ ॥"<sup>4</sup>

इस गायन में जो भाव है वह पूर्ण रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में प्रतिभाग करता हुआ प्रतीत होता है। "इस पद ने सदन के हृदय में उच्च भावों का स्रोत-सा खोल दिया 'देशोपकार, जाति-सेवा तथा राष्ट्रीय गौरव की पवित्र भावनाएँ उसके हृदय में गूँजने लगीं। यह बाह्य ध्वनि उसके अंतर में भी एक विशाल ध्वनि पैदा कर रही थी। जगज्जननी की दयामयी मूर्ति उसके हृदय नेत्रों के सम्मुख खड़ी हो गयी। दरिद्र, दुखी, दीन, क्षीण बालक दीन भाव से देवी की ओर ताक रहा था और अपने दोनों हाथ उठाये, सजल आँखों से देखता हुआ कह रहा था, 'दयामयि भारत को अपनाओ।' उसने कल्पनाओं में अपने को दीन कृषकों की सेवा करते हुए देखा। वह जमींदारों के कारिन्दों से विनय कर रहा था कि इन दीन जनों पर दया करो! कृषकगण उसके पैरों पर गिर पड़ते थे, उनकी स्त्रियाँ उसे आशीर्वाद दे रही थीं। स्वयं इस कल्पित बारात का

दूल्हा बना हुआ सदन यहाँ से जाति सेवा का संकल्प करके उठा और नीचे उतर आया।"<sup>5</sup> अन्य अनेक स्थानों पर उपन्यास में प्रेमचंद ने सामाजिक- सांस्कृतिक परंपराओं को तोड़ते हुए पराधीन भारत में नारी की परतंत्रता का निष्ठुर एवं वीभत्स रूप में चित्रण किया है।

प्रेमाश्रम में भी राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ है। क्योंकि इस समय भारत को शान्ति तथा सहयोग का पुरस्कार 'रोलेक्ट एक्ट' व 'जलियावाला बाग हत्याकांड' के रूप में मिल चुका था। 'प्रेमाश्रम' गांधीवाद के प्रभाव में लिखा गया। गांधीजी की कार्यप्रणाली जीवन दर्शन और व्यक्तित्व के प्रति प्रेमचंद की अगाध श्रद्धा महसूस की जा सकती है। सुधारवाद, सत्याग्रह, हृदय- परिवर्तन उनके युग की सीमाएं थीं। उपन्यास के एक पात्र बलराज युवाओं की सोच में परिवर्तन का घोटक है- "तुम लोग तो ऐसी हंसी उड़ाते हो, जानो कास्तकार कुछ होता ही नहीं, वह ज़मींदार की बेगार ही भरने के लिए बनाया गया है; लेकिन मेरे पास जो पत्र आता है उसमें लिखा है कि रूस देश में कास्तकारों का ही राज है, वह जो चाहते हैं करते हैं। उसी के पास कोई देश बलगारी है। वहां भी हाल की बात है, कास्तकारों ने राजा को गाड़ी से उतार दिया है और अब किसानों और मजूरों की पंचायत राज करती है।"<sup>6</sup> बलराज के पास बल्गारिया के किसानों की सूचना प्रेषित करके प्रेमचंद ने इस बात पर बल दिया कि भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन किसानों से अछूता था और आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि आन्दोलन में किसानों की समस्याओं को भी अंग बनाया जाए ताकि आंदोलन को व्यापकता प्रदान की जाए जिससे दासता की श्रृंखलाएं टूटें। समय के साथ जमींदारों को भी एहसास दिलाने के लिए कि समय बदल रहा है प्रेमचंद मायाशंकर के द्वारा यह संदेश देते हैं- "मेरी धारणा है कि मुझे किसानों की गर्दन पर अपना जुआ रखने का कोई अधिकार नहीं है। यह मेरी नैतिक दुर्बलता और भीरुता होगी अगर मैं अपने सिद्धांत को भोग लिप्सा पर बलिदान कर दूं। अपनी ही दृष्टि में पतित होकर कौन जीना पसंद करेगा? मैं आप सब सज्जनों के सम्मुख उन अधिकारों और सशक्तता का त्याग करता हूं जो प्रथा, नियम और समाज व्यवस्था ने मुझे दिए हैं। मैं अपनी प्रजा को अपने अधिकारों के बंधन से मुक्त करता हूं। वह न मेरे आसामी हैं, न मैं उनका ताल्लुकेदार हूं। यह सब सज्जन मेरे मित्र हैं, मेरे भाई हैं, आज से वह अपनी जोत के स्वयं जमींदार हैं अब उन्हें मेरे कारिंदों के अन्याय और मेरी स्वार्थ भक्ति की यात्रणाएं न सहनी पड़ेंगी।"<sup>7</sup>

'कर्मभूमि' में अमरकांत महाजन लाला समरकांत के बेटे हैं राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव में समाज सेवा के कामों में भाग लेते हैं। पिता और पत्नी विरोध करते हैं। घर से झगड़ा करते हैं और एक गाँव में जाकर किसानों का संगठन करते हैं। आगे चलकर उनके घरवाले भी आन्दोलन में शामिल होते हैं वह अपने घर वापस आते हैं। प्रेमचंद केवल यथार्थ का अक्स उतारने वाले कलाकार नहीं थे। वे यथार्थ के महत्वपूर्ण पहलुओं को परखकर उपन्यास में विशेष स्थान देते थे। यही कारण है कि 'कर्मभूमि' में वह सबसे अधिक बल ज़मीन की समस्या, लगान की समस्या, खेत- मज़दूरों और गरीब किसानों के लिए जमीन की समस्या पर देते हैं। प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' उपन्यास सविनय अवज्ञा-आंदोलन के दिनों लिखा था। "दैनिक समाचार- पत्रों के पढ़ने से अमरकांत के राजनीतिक ज्ञान का विकास होने लगा। देशवासियों के

साथ शासक- मंडल की कोई अनीति देखकर उसका खून खौल उठता था। जो संस्थाएं राष्ट्रीय उत्थान के लिए उद्योग कर रही थीं। उनसे उसे सहानुभूति हो गई। वह अपने नगर की कांग्रेस कमेटी का मेंबर बन गया और उसके कार्यक्रम में भाग लेने लगा"<sup>8</sup>

प्रेमचंद की दृष्टि जनता के उन स्तरों की तरफ जाती है जो अपनी जिंदगी और मौत की समस्या हल करने के लिए इस आन्दोलन में आगे बढ़ते हैं। उपन्यास में गरीबों की दयनीय स्थिति का चित्रण है लेकिन सुसंस्कृत अंग्रेजी राज्य ने गोरे और फौजियों को हत्या और बलात्कार की छूट दे रखी थी। अमरकांत और उसके साथी विद्यार्थी गांवों का आर्थिक जीवन देखकर लौटते हैं तब अचानक उन्हें अरहर के खेत से एक स्त्री के चीत्कार की आवाज़ आती है। लड़के डंडे संभालकर खेत की तरफ लपकते हैं। दो गोरे बाहर खड़े हुए पहरेदारी कर रहे थे। जब इन विद्यार्थियों ने उनसे पूछा तो उन गोरो ने इनसे जाने को कहा "भाग जाओ नहीं हम ठोकर मारेगा। इतना उसके मुँह से निकला था कि डॉ शान्ति कुमार में लपककर उसके मुँह पर घूंसा मारा भाए। सैनिक के मुँह पर घूंसा पड़ा, तिलमिला उठा सिर... दूसरे सैनिक का अमर और उसके दूसरे छात्र ने पीटना शुरू कर दिया था।"<sup>9</sup> इस पूरी घटना से यह सिद्ध होता है कि प्रेमचंद गांधीवादी थे हिंसा का मार्ग उनका मार्ग था परंतु अत्याचार के लिए उनके समीप यही रास्ता था, वे अत्याचार का सामना इस प्रकार से करने के लिए भी तैयार थे क्योंकि प्रेमचंद का यह उपन्यास स्वाधीनता - आन्दोलन के उस दौर का है जब लोग अंग्रेजों का मनमाना अत्याचार सहने के लिए तैयार न थे। वे अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने लगे थे। उसके लिए वे जो भी साधन मिलें उनका उपयोग करने के लिए तैयार थे। प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' में पहली बार मजदूरों और विद्यार्थियों को एक साथ अंग्रेजों का मुकाबला करते दिखाया है। अमरकांत मन ही मन इस घटना की व्याख्या करता है - "इन टके के सैनिकों की इतनी हिम्मत क्यों हुई? यह गोरे सिपाही इंग्लैंड के निम्नवत् श्रेणी के मनुष्य होते हैं न। इनका इतना साहस कैसे हुआ? इसीलिए कि भारत पराधीन है। यह लोग जानते हैं कि यहां के लोगों पर उनका आतंक छाया हुआ है। वह जो अनर्थ चाहें करें। कोई चूं तक नहीं कर सकता। यह आतंक दूर करना होगा। इस पराधीनता की जंजीर को तोड़ना होगा"<sup>10</sup> भिखारिन के द्वारा अंग्रेजी सिपाहियों पर चाकू से वार करने पर उसको हिरासत में लिया जाता है यह जानने पर कि यह वहीं आऔरत है जिसका बलात्कार इन सिपाहियों ने किया था, सुखदा जिसको इन बातों से कोई सरोकार नहीं था परंतु इस घटना को जानने के बाद कहती है "अगर इसको फांसी हो गई तो मैं समझूंगी संसार से न्याय उठ गया है। उसने कोई अपराध नहीं किया। जिन दुष्टों ने उस पर ऐसा अत्याचार किया उन्हें, यही दंड मिलना चाहिए था।"<sup>11</sup> सुखदा के शब्दों में प्रेमचंद ने हिन्दुस्तानी स्त्रियों की विशेषता प्रकट की अन्यायी को दंड मिलने पर ऐसा हर्ष वे ही प्रकट कर सकती थीं।

प्रेमचंद के उपन्यास 'ग़बन' में भी राष्ट्रीय आन्दोलन का चित्रण पात्रों के माध्यम से किया गया है। प्रेमचन्द ने मुख्य पात्र जालपा के चरित्र का विकास कर यह दिखाया है कि जिस राष्ट्रीय आन्दोलन को अखिल भारतीय आन्दोलन कहा जाता है उसमें देश की आधी आबादी का जब तक योगदान नहीं होगा हमारी आज़ादी पूर्ण नहीं है। वह सेवा और त्याग की

प्रतिमूर्ति नज़र आती है, और आभूषण तो क्या अपने पति तक को राष्ट्रीय आन्दोलन की बलिदेवी पर न्योछावर करने में जरा भी नहीं हिचकती। जालपा उससे सारा वृत्तांत कह सुनाती है और उससे अपना बयान वापस लेने पर ज़ोर देती है।<sup>12</sup> परंतु रमा पुलिस के दबाव में बयान नहीं बदल पाता। जालपा की भूमिका केवल आभूषण प्रेमी स्त्री की नहीं रह जाती। जब उसे पता चलता है कि उसके पति की झूठी गवाही के कारण निर्दोष देशभक्तों को फांसी या काले पानी की सजा हो सकती है, तो वह कलकत्ता पहुंचती है। वह रमानाथ को धिक्कारती है और क्रांतिकारियों के परिवारों की मदद करती है। जालपा का यह रूप तत्कालीन भारतीय नारी में जाग रही राजनैतिक और राष्ट्रीय चेतना को दर्शाता है।

इसी प्रकार 'रंगभूमि' का सूरदास जो कि गंधीवाद का प्रतीक सत्याग्रह का मार्ग प्रशस्त करता हुआ प्रतीत होता है। 'रंगभूमि' में प्रेमचंद ने आह्वान किया कि "अब हमें स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि केवल पीसकर तेल निकालने के लिए हमारा अस्तित्व मिटाने के लिए हमारे ऊपर राज्य किया जा रहा है।"<sup>13</sup> उपन्यास में ब्रिटिश सरकार के हाकिमों की जो दहशत थी उसको दिखाया गया है कानून, व्यवस्था या सत्ता सब उनके अनुसार था-"मिस्टर क्लार्क ने कठोर स्वर में कहा - हम ही सरकार हैं हमने वह कानून बनाया है। हमको सब अख्तियार है आप अभी राजा साहब को परवाना लिख दें। कल लोकल गवर्नमेंट को उसकी नकल भेज दीजिएगा जिले के मालिक हम हैं। सूबे की सरकार नहीं..... अमले थरा उठे, डिप्टी साहब को दिल में कोसने लगे- यह क्यों बीच में बोलते हैं। अंग्रेज़ हैं कहीं गुस्से में आकर मार बैठे, तो उसका क्या ठिकाना। ज़िले का बादशाह है, जो चाहे करे, अपने से क्या मतलब।"<sup>14</sup> उपन्यास में सामाजिक एवं परिवर्तन का यथार्थ चित्रण है। किस प्रकार भारतीय समाज पर उद्योग आरोपित किया जा रहा था। सारी व्यवस्था उद्योगपतियों के हाथों में जा रही थी, सरकार, शासन -प्रशासन सभी नत-मस्तक थे उसका एक उदाहरण दृष्टव्य है-"हां, बहुत अच्छी बात है, हम सब मिलकर उसे अंधे के पास चलें और उसके पैरों पर सिर झुकाएं। आज उसके डर से ज़मीन छोड़ दूं, कल चमड़े की आढ़त तोड़ दूं, परसों यह बंगला छोड़ दूं और उसके बाद मुंह छुपा कर यहां से कहीं चला जाऊं। क्यों, यही सलाह है ना? फिर शांति ही शांति है, न किसी से लड़ाई, ना झगड़ा। यह सलाह तुम्हें मुबारक रहे। संसार शांति - भूमि, समर-भूमि है। यहां वीर और पुरुषार्थियों की विजय होती है। निर्बल और कायर मारे जाते हैं। मिस्टर क्लार्क और राजा महेंद्र की हस्ती क्या है? सारी दुनिया भी अब इस ज़मीन को मेरे हाथों से नहीं छीन सकती। मैं सारे शहर में हलचल मचा दूंगा। सारे हिंदुस्तान को हिला डालूंगा। अधिकारियों की स्वच्छाचारिता की है यह मिसाल देश के सभी पत्रों में उद्धृत हो जाएगी। कौंसिलों और सभाओं में एक नहीं सहस्त्र- सहस्त्र कंठों से घोषित की जाएगी और उसकी प्रतिध्वनि अंग्रेजी पार्लियामेंट तक में पहुंचेगी। यह स्वजातीय उद्योग और व्यवसाय का प्रश्न है। इस विषय में समस्त भारत के रोजगारी क्या हिंदुस्तानी और क्या अंग्रेज, मेरे सहायक होंगे और गवर्नमेंट कोई इतनी निर्बुद्धित नहीं है कि वह व्यवसायियों की सम्मिलित ध्वनि पर कान बन्द कर ले। यह व्यापार राज्य का युग है। यूरोप में बड़े-बड़े शक्तिशाली साम्राज्य पूंजीपतियों के इशारे पर बनते - बिगड़ते रहते हैं, किसी गवर्नमेंट का साहस नहीं कि उनकी इच्छा का विरोध करें।"<sup>15</sup> शक्ति एवं हिंसा के बल पर भारतीय समाज का दमन किया जा रहा था इसमें अमानवीयता दिनों-दिन बढ़ रही थी

क्योंकि स्वतंत्रता का महत्व भारतवासी समझ रहे थे। मिस्टर क्लार्क के शब्दों में-"साम्राज्य रक्षा के सामने एक व्यक्ति के जीवन की कोई हस्ती नहीं। जिस दया से, जिस सहृदयता से किसी दीन प्राणी का पेट भरता हो, उसके शारीरिक कष्टों का निवारण होता हो, किसी दुखी जीव को सांत्वना मिलती हो, उसका मैं कायल हूँ, और मुझे गर्व है कि मैं उस संपत्ति से वंचित नहीं हूँ; लेकिन जो सहानुभूति साम्राज्य की जड़ खोकली कर दे, विद्रोहियों को सिर उठाने का अवसर दे, प्रजा में अराजकता का प्रचार करे, उसे मैं अदूरदर्शिता ही नहीं, पागलपन समझता हूँ।"<sup>16</sup> अंतः 'रंगभूमि' में सूरदास का अपनी ज़मीन और अधिकारों के लिए किया गया अहिंसक संघर्ष आम जनता के बीच राष्ट्रीय चेतना और सामूहिक प्रतिरोध की शक्ति को जागृत करता है।

'कायाकल्प' उपन्यास में मुख्य पात्र चक्रधर गांधीवादी आदर्शों और विचारों का प्रतीक है। वह देश की स्वतंत्रता और सामाजिक सुधार के लिए महात्मा गांधी के शांतिपूर्ण और सेवा-भाव के मार्ग पर चलने का प्रयत्न करता है। उपन्यास में आगरा में भड़कने वाले साम्प्रदायिक दंगों को शांत करने में चक्रधर प्रेम, संयम और सद्भाव का प्रयोग करता है जो कि गांधीवादी विचारधारा का वाहक है। साथ ही यशोदानंदन और खवाजा महमूद की मित्रता के द्वारा लेखक ने राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया है।

प्रेमचंद ने 'गोदान' उपन्यास में सक्रिय आंदोलन को नहीं दिखाया था, क्योंकि 'गोदान' लिखते समय वे यह महसूस कर रहे थे कि उस समय का राष्ट्रीय आंदोलन मुख्य रूप से शहरी बुद्धिजीवियों और संभ्रांत वर्ग तक सीमित था। वह विशाल किसान वर्ग तक पूरी तरह नहीं पहुँच पाया था। उपन्यास में पात्र रायसाहब, अमरपाल सिंह, पत्रकार ओंकारनाथ, तन्खा, खन्ना, मेहता और मालती जैसे शहरी व पढ़े-लिखे पात्र राष्ट्रीय आंदोलन और राजनीति पर चर्चा करते हैं। रायसाहब जैसे जमींदार गुप्त रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में सहयोग देते हैं ताकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे। उपन्यास के आरंभ में रायसाहब का परिचय देते हुए प्रेमचंद कहते हैं, "पिछले सत्याग्रह-संग्राम में रायसाहब ने बड़ा यश कमाया था। कौंसिल की मेम्बरी छोड़कर जेल चले गये थे। तब से उनके इलाके के असामियों को उनसे बड़ी श्रद्धा हो गयी थी।"<sup>17</sup> ऐसे ही गोबर के व्यक्तित्व के संबंध प्रेमचंद लिखते हैं – "सभाओं में आने-जाने से उसे कुछ-कुछ राजनीतिक ज्ञान भी हो चला है। राष्ट्र और वर्ग का अर्थ समझने लगा है। सामाजिक रूढ़ियों की प्रतिष्ठा और लोक-निन्दा का भय अब उसमें बहुत कम रह गया है। आये दिन पंचायतों ने उसे निस्संकोच बना दिया है। जिस बात के पीछे वह यहाँ घर से दूर, मुँह छिपाए पड़ा हुआ है, उसी तरह थी, बल्कि उससे भी कहीं निन्दास्पद बातें यहाँ नित्य हुआ करती और कोई भागता नहीं।"<sup>18</sup> इसी प्रकार मुखिया को 'हत्यारे' बताते हुए धनिया उन पर टिप्पणी करती है – "उस पर सुराज चाहिए। जेल जाने से सुराज न मिलेगा। सुराज मिलेगा धर्म से, न्याय से।"<sup>19</sup> प्रेमचंद ने लगभग अपने सभी उपन्यासों में राष्ट्रीय आंदोलन को समानता पर आधारित समाज व्यवस्था की स्थापना के पर्याय के रूप में देखा है। अतः राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा जमींदारी प्रथा को नष्ट करने का प्रयास मुख्य रूप से उभर कर सामने आया। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आंदोलन के इस मुख्य उद्देश्य को अपने उपन्यासों की कथावस्तु में इस प्रकार शामिल किया है जिससे

जनचेतना का विकास हो और यही जन आंदोलन का स्वरूप ले सके। राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना के विकास के कारण सामान्य जन में नई आशाएं, आकांक्षाएं जन्म ले रही थी।

**निष्कर्षतः** कहा जा सकता है कि प्रेमचंद का संपूर्ण उपन्यास साहित्य किसी न किसी रूप में राष्ट्रीय आंदोलन का चित्रण करते हुए एवं स्वतंत्रता संघर्ष का पथ प्रशस्त करते हुए दिखाई देता है। उपर्युक्त राजनीतिक एवं सामाजिक परिदृश्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रेमचंद का यह चित्रण वास्तव में तत्कालीन युगीन इतिहास है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची:

- 1- राजेन्द्र मोहन भट्टनागर, कांग्रेस का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1986, 786,141.
2. अमृतराय, कलम का सिपाही हंस प्रकाशन, इलाहाबाद पृ० 459. 1976 नवीन संस्करण.
3. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, सरस्वती मंदिर, वाराणसी 1968, पृ. 135.
4. प्रेमचंद, सेवासदन, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, प्र. लि. जयपुर, 302001, 1991 संस्करण. पृ. 212
5. प्रेमचंद, सेवासदन, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, प्र. लि. जयपुर ; 302001, 1991 संस्करण. पृ. 212
6. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, प्र. लि. जयपुर ; 302001, 2004 संस्करण, पृ. 44
7. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, प्र. लि. जयपुर ; 302001, 2004 संस्करण, पृ. 361
8. प्रेमचंद, कर्मभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 18
9. प्रेमचंद, कर्मभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 20
10. प्रेमचंद, कर्मभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 21
11. प्रेमचंद, कर्मभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 39
12. प्रेमचंद, ग़बन, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 235
13. प्रेमचंद, रंगभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 252
14. प्रेमचंद, रंगभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001, 2004 संस्करण. पृ. 206



- 15.प्रेमचंद, रंगभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001,2004 संस्करण. पृ.207
- 16.प्रेमचंद, रंगभूमि, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001,2004 संस्करण. पृ.267
- 17.प्रेमचंद, गोदान, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001,2004 संस्करण. पृ.12
- 18.प्रेमचंद, गोदान, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001,2004 संस्करण. पृ.153
- 19.प्रेमचंद, गोदान, राजस्थान पीपुल्स, पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 302001,2004 संस्करण. पृ.122